B.A. Part I
Paper II

पीगू प्रभाव (Pigou effect)

पीगू प्रभाव को धन प्रभाव भी कहते हैं। पीगू प्रभाव की प्रस्थापना ए. सी. पीगू ने 1943 में केन्ज़ के उस तर्क का खण्डन करने के लिए की थी कि मजदूरी कीमत अवस्फीति (price deflation) अपने-आप पूर्ण रोजगार की स्थिति नहीं ला सकती।

पीगू ने केन्ज़ के उस ब्याज ~~का~~ दर प्रभाव को तो पूरी तरह माना कि मजदूरी-कीमत अवस्फीति ब्याज दर में कटौती के माध्यम से निवेश तथा आय को बढ़ाती है। परंतु वह केन्ज़ की इस बात से सहमत नहीं था कि तरलता-जाल के कारण वास्तविक आय को बढ़ाकर पूर्ण रोजगार के स्तर तक नहीं पहुँचाया जा सकता। पीगू का मत है कि मजदूरी-कीमत अवस्फीति उपभोग का स्तर बढ़ाकर अपने-आप पूर्ण रोजगार को लाएगी। उसका कहना है कि जब मुद्रा मजदूरी घटती है, तो कीमतें गिरती हैं और मुद्रा का मूल्य बढ़ जाता है। मुद्रा का मूल्य बढ़ने का मतलब है इस तरह ही परिसंपत्तियों के वास्तविक मूल्य में वृद्धि जैसे स्टॉक, शेयर, बैंक जमा, सरकारी प्रतिभूतियां, बॉंड इत्यादि। उदाहरणार्थ, यदि कीमतें 50 प्रतिशत गिर जाएं तो प्रत्येक रुपये का वास्तविक मूल्य ~~को~~ दो गुणा हो ~~जाएगा~~ जाएगा, क्योंकि उससे पहले की अपेक्षा दो गुणा क्रय किया जा सकता है। इस प्रकार स्थिर परिसंपत्तियों के मूल्य में वृद्धि होने से उनके मालिक अपने को पहले से अधिक धनी महसूस करेंगे। इसलिए, वे अपनी चालू आय में से कम बचत करेंगे और उपभोग पर अधिक खर्च करेंगे। इससे समस्त मांग और उत्पादन बढ़ेंगे और अर्थव्यवस्था में अपने-आप पूर्ण रोजगार होगा। पीगू प्रभाव के परिणामस्वरूप उपभोग फलन ऊपर की ओर सरकेगा (अथवा बचत फलन नीचे को सरकेगा)। IS फलन की शब्दावली में इसका मतलब यह है कि IS दक्ष दाईं ओर सरक जाता है।

पीगू प्रभाव में महत्वपूर्ण बात यह है यह दो मान्यताओं पर आधारित है। एक लचीला मजदूरी तथा कीमत स्तर और दूसरा, मुद्रा का स्थिर स्टॉक

Scanned by CamScanner

इसलिए जब स्थिर परिसंपत्तियों का वास्तविक मूल्य बढ़ता है, तो उपभोग बढ़ने या बचत घटने से केवल IS वक्र ही दायें को सरकता है। मुद्रा के स्थिर स्टॉक की मान्यता के कारण LM वक्र दिया हुआ मान लिया गया है। इसका कारण यह है कि पीगू का विश्लेषण पूर्णरूप से ~~f~~ स्थैतिक है।

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि यह विश्लेषण निरपेक्ष (absolute) कीमतों के लचीलेपन पर आधारित है। पैटिनकिन ने पीगू प्रभाव का सारांश निम्न प्रमेय के रूप में प्रस्तुत किया है। "एक ऐसा पर्याप्त निम्न ~~कि~~ कीमत स्तर हमेशा विद्यमान रहता है जो पूर्ण रोजगार उत्पन्न करेगा, बशर्ते कि उसके अनिश्चित रूप से बने रहने की आशा हो।" बीजगणितीय भाषा में, यदि मुद्रा की पूर्ति, जिसे स्थिर मान लिया गया है, M_0 हो और कीमत स्तर P_1 हो तो बचत फलन (अथवा उपभोग फलन) होगा: $S = f[RY[M_0/P)]$। इस प्रकार ब्याज दर (R) आय (Y) तथा निरपेक्ष कीमतों से दी गई मुद्रा पूर्ति के अनुपात (M_0/P) पर बचत निर्भर करती है। जब ~~कीमतें~~ कीमतें गिरती हैं तो मुद्रा के दिए हुए स्टॉक का वास्तविक मूल्य बढ़ जाता है और लोग अपनी बचतें घटा देते हैं अथवा उपभोग बढ़ा देते हैं जिससे समस्त मांग बढ़ जाती है। यह प्रक्रिया अपने आप अर्थव्यवस्था को पूर्ण रोजगार के स्तर पर पहुंचा देगी; और तब मजदूरी तथा कीमतों का गिरना बंद हो जाता है। पीगू प्रभाव में, ब्याज लोचें और बचत एवं निवेश फलनों की स्थितियां असंगत हैं।

पीगू प्रभाव चित्र 2 (A) तथा (B) में प्रदर्शित किया गया है। शुरू में चित्र के भाग (A) में, मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था आय के OY_1 स्तर पर है जिसे IS तथा LM_0 फलन E_1 बिन्दु पर निर्धारित करते हैं। अब मजदूरी - कीमत अवस्फीति शुरू होती है जो उपभोग फलन को बढ़ाती है जिससे IS_1 फलन दाईं ओर को सरक कर IS_3 पर चला जाता है। LM_0 फलन दिया हुआ होने पर, IS_3 फलन E_3 बिन्दु पर LM_0 फलन को काटता है और परिणामस्वरूप आय स्तर OY_1 को बढ़ाकर पूर्ण रोजगार स्तर OY_f पर पहुंचा देता है। चित्र का भाग (B) भाग बताता है कि जब मुद्रा - मजदूरी गिरने से कीमत स्तर OP_3 से गिरकर OP_1 पर आता है तो पीगू प्रभाव के मार्ग से तो समस्त मांग में वृद्धि से आय OY_1 से बढ़कर पूर्ण रोजगार स्तर OY_f पर पहुंच जाती है। इसे नीचे की ओर ढालू समस्त मांग वक्र AD द्वारा दिखाया गया है।

Scanned by CamScanner

(B)

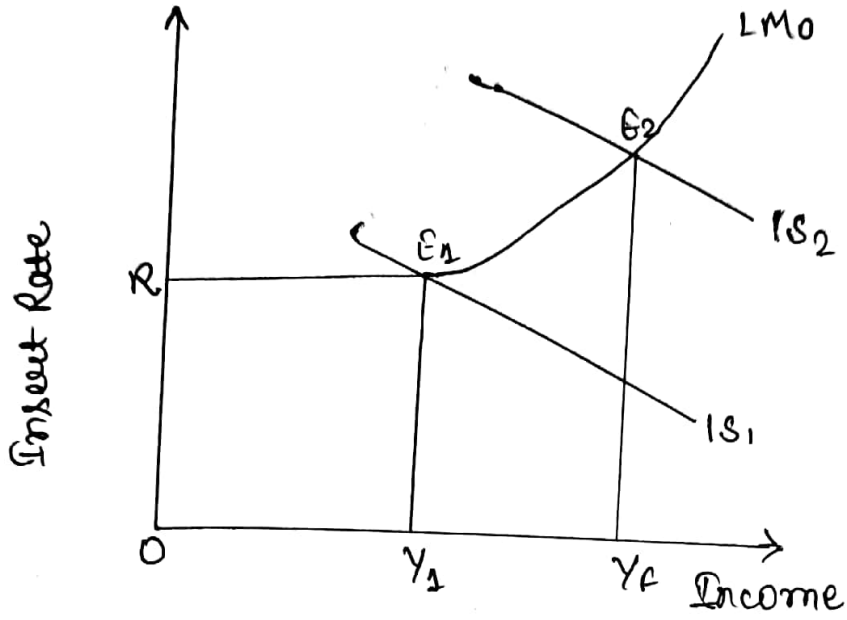

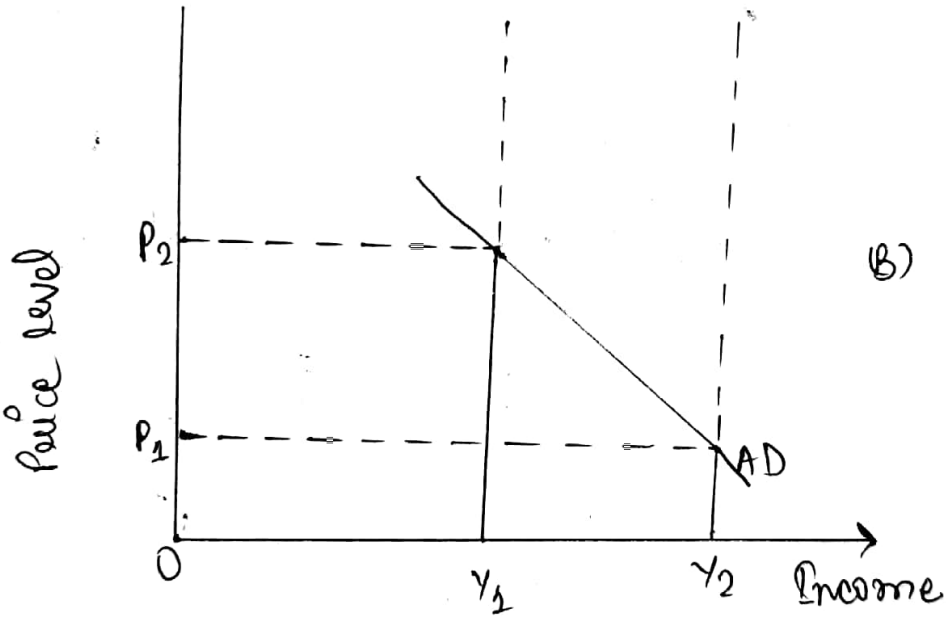

(B)

Scanned by CamScanner